हिन्दी पत्रकारिता का महत्व

*डॉ अनिल अग्रवाल

पत्रकारिता समाज के विचारों और साहित्य की संवाहिका है जो समाज और साहित्य के इतिहास में अपना स्थान प्रतिष्ठित करने के साथ-ही-साथ साहित्य और इतिहास का निर्माण भी कराती है ।ग्रंथों में समाहित साहित्य से जो कार्य सम्भव नहीं है उस कार्य को पत्र-पत्रिकाओं के साहित्य ने सम्भव करने का हमेशा प्रयास किया है। वर्तमान जीवन के बहुआयामी विस्तार और विकास से सुपरिचित होने के लिए पत्रकारिता अपरिहार्य है। पत्रकारिता अतीत को उद्घाटित करने के साथ आज प्रत्येक मनुष्य की साँस और धड़कन को विश्लेषित भी करती है। विश्व के न केवल साहित्य बल्कि विज्ञान, भूगोल, इतिहास और मनोविज्ञान आदि को प्रस्तुत करने तथा खेलकूद, संगीत, नृत्य, फिल्म आदि को लोकप्रिय बनाने में पत्रकारिता का स्थान सर्वोच्च है।

भारतीय हिन्दी पत्रकारिता की कहानी अनेक पत्रकारों और साहित्यकारों के युगों से होकर गुजरी है। हिन्दी पत्रकारिता के विकास में प्रमुख रूप से भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता, द्विवेदी युगीन पत्रकारिता ,छायावाद युगीन पत्रकारिता, स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी पत्रकारिता एवं समसामयिक साहित्यिक पत्रकारिता का महत्त्वपूर्ण योगदान है। भारतेन्दु युग से साहित्यिक पत्रकारिता की यात्रा प्रारम्भ हुई थी ।"हिन्दी पत्रकारिता का शुभारम्भ 30 मई, 1826 में हिन्दी के प्रथम पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' से हुआ था, जिसके सम्पादक पं. युगल किशोर शुक्ल थे। तब से लेकर अब तक हिन्दी पत्रकारिता के स्वरूप, क्षेत्र तथा विषयवस्तु में अनेक व्यापक परिवर्तन हो चुके हैं।"[1]

आधुनिक भारतीय समाज में साम्राज्यवादी ताकतों के खिलाफ संघर्ष से लेकर सामाजिक रूढ़ियों, उत्पीड़नों एवं विषमताओं के खिलाफ चले संघर्षों में प्रेस ने अग्रणी भूमिका अदा की है। सामाजिक अन्तविरोधों, संघर्षों एवं नए विचारों की स्थापना की जितनी भी लड़ाईयाँ चली है उनमें प्रेस की निर्णायक भूमिका रही है। विचारों और सामाजिक शक्तियों के संघर्षो में प्रेस इतनी गंभीर एवं बहुआयामी भूमिका अदा करता है, जिसके महत्त्व को हिन्दी पत्रकारिता ने पूरी तरह नहीं पहचाना है

"पत्रकारिता अध्ययन का एक स्वतंत्र अनुशासन है। इसे अधिरचना के किसी क्षेत्र या अनुशासन का विस्तारित केन्द्र नहीं मान लेना चाहिए। साथ ही राजनीतिक आन्दोलन का यह प्रतिबिम्व मात्र नहीं है अपितु यह एक स्वतंत्र अधिरचना है।"[2] इसका अधिरचना के अन्य रूपों से गहरा सम्बन्ध एवं सम्पर्क है।

आधार ही शक्तियों के संघर्षों एवं अन्तर्विरोधों, वैचारिक अन्तर्वस्तु एवं रूपों अभिरुचियों एवं आदतों के निर्माण में इसकी निर्णायक भूमिका होती है।इसकी प्रक्रिया विचारधारा एवं संरचना का अध्ययन जनमाध्यमों के नियमों, प्रक्रियाओं एवं सिद्धान्तों की रोशनी में ही सम्भव है।

"हिन्दी में पत्रकारिता के इतिहास पर जितनी सामग्री उपलब्ध है वह अन्तर्वस्तु के विवेचन तक सीमित है। पत्रकारिता अनावस्तु को सर्वस्व मान कर चलती है। पत्रकारिता में अन्तर्वस्तु को सर्वस्व मानना मूलतः एकांगी दृष्टिकोण है। अन्तर्वस्तु महत्त्वपूर्ण होती है,किन्तु सर्वस्व नहीं है।"3अन्तर्वस्तु के अलावा संचार का माध्यम या पाठकीय चेतना और बाजार की शक्तियों की भूमिका के साथ अखबार में प्रस्तुत सामग्री और शब्द संरचना का समान महत्त्व होता है। इनमें से किसी भी तत्त्व को छोड़ा नहीं जा सकता ।

आधुनिक काल के आरम्भ में भाषा की अराजकता से मुक्ति के सन्दर्भ में साहित्य एवं पत्रकारिता की भाषा एक जैसी मिलती है। यह मूलतः भाषिक एकरूपता के निर्माण के कारण होता है। भाषागत अराजकता का ज्यों ही खात्मा होता है, पत्रकारिता की भाषा अपना स्वतंत्र मार्ग ग्रहण करना शुरू कर देती है। यह मूलतः विसंदर्भीकृत भाषा है जो इतिहास बोध से मुक्त कर देती है। यह ऐसी भाषा है जिसकी अन्तर्वस्तु अल्पायु है। जिसे बहुत लम्बे समय तक याद रखना सम्भव नहीं है। यही वजह है कि भारतेन्दु युगीन हिन्दी से की भाषा का कोई सम्बन्ध जुड़ता हुआ दिखाई नहीं देता। भारतेन्दु युग के रचनाकारों ने जिस खड़ी बोली हिन्दी का निर्माण किया था वह बाजार की भाषा थी। जबकि पत्रकारिता ने जिस भाषा का निर्माण किया वह बाजार की भाषा न होकर पाठकीय चेतना के सबसे निचले धरातल पर सक्रिय सामान्य बोध की भाषा थी। यह मूलत: जनमाध्यम की भाषा थी।

"पत्रकारिता के इतिहास पर दृष्टि डालें तो पाएंगे कि अधिकतर इतिहासकार पत्रकारिता की भूमिका के प्रश्न पर जरूर प्रकाश डालते हैं। भूमिका का प्रश्न परिप्रेक्ष्य से जुड़ा है।

सामाजिक परिस्थितियों के यथार्थ ज्ञान से इसका गहरा सम्बन्धहै।"[4] ज्यादातर इतिहासकारों ने ने पत्रकारिता की भूमिका को राजनीति साहित्य तक सीमित करके देखने की कोशिश की है, जो इतिहास से लेकर साहित्य परम्परा से आते हैं वे पत्रकारिता की साहित्य सम्बन्धी भूमिका मात्र की चर्चा करते हैं। पत्रकारिता की भूमिका बहुआयामी होती है। भूमिका का प्रश्न परिवेश की समझ से जुड़ा हुआ है। अतः पत्रकारिता की भूमिका के स्तर भी एक नहीं अनेक होंगे।

पत्रकारिता की सामाजिक भूमिका को लेकर उदार दृष्टिकोण यह मानता है कि सरकार और समाज के बीच में व्यक्ति के द्वारा आधिकारिक एवं गैर आधिकारिक तौर पर राज्य पर अपने अधिकारों का प्रयोग किया जाता है। सरकार चुनने एवं आमराय बनाने के लिए माध्यमों का इस्तेमाल किया जाता है। यह व्यक्तियों के सहमेल का मान समाज है, इस धारणा पर बल देता है। यह दृष्टिकोण भारतीय पत्रकारिता का सबसे लोकप्रिय दृष्टिकोण है। राजा राम मोहन राय स्वयं इसके प्रणेता थे।

आज के बदले हुए परिदृश्य में नए दृष्टिकोण की जरूरत है। व्यापक राजनीतिक अर्थो में माध्यमों की भूमिका को रेखांकित करने की जरूरत है। सामाजिक क्षेत्र को राजनीतिक क्षेत्र का पर्याय नहीं समझना चाहिए। बल्कि ये तो पर्याय है। हिन्दी पत्रकारिता आज ऐसे मोड पर है जहां से उसके भविष्य का स्वरूप निर्धारित होने जा रहा है। आज न वह तकनीकी साधनों के इस्तेमाल के पीछे है न आर्थिक संसाधनों में ।"इसलिए हिन्दी में पत्रकारिता की पुस्तकों का अभाव और धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। गत कुछ वर्षों में हिन्दी में पत्रकारिता के विविध विधाओं पर उच्चस्तरीय पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है। इससे ना केवल पत्रकारिता की पुस्तकों का अभाव खत्म हुआ है बल्कि विद्यार्थियों का भी पत्रकारिता के प्रति रुझान बढ़ा है।"[5]

आज हम नई सदी के द्वार पर हैं । राष्ट्र का विराट पुरुष जाग उठा है। नई सुबह को नए मानव गढ़ने में हिंदी पत्रकारिता पुरस्सर है। भले ही हमारी पत्रकारिता कुछ लोगों की दृष्टि में तमिस्रगामी दृष्टिगत हो रही है परंतु वह प्रकाशोन्मुख है । यह सारस्वत यज्ञ है जिसमें अधिकाशतःपत्रकार परिवेश की चिता कर रहे हैं तथा अपने चिन्तन से पाठकों के का उन्नयन कर रहे हैं। आज भारत की अखण्डता और विश्वबन्धुत्व की भावना के लिए पत्रकारिता सत्यं शिवं सुन्दरम् का शंखनाद कर रही है जो सुखद है।

***सहायक आचार्य हिंदी**
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हिंडौन सिटी

संदर्भ सूची

1. जगदीश चतुर्वेदी--- पत्रकारिता के परिपेक्ष्य, पृष्ठ 144
2. अर्जुन तिवारी ---- हिंदी पत्रकारिता का इतिहास, पृष्ठ 105
3. डॉ.प्रेमचंद गोस्वामी ---- पत्रकारिता के प्रतिमान, पृष्ठ 74
4. राजकिशोर ---- समकालीन पत्रकारिता, पृष्ठ 14
5. वही--- पृष्ठ 07